"सूतक"

• जे कर सूतक मंनीऐ सभ तै सूतक होइ । गोहे अते लकड़ी अंदर कीड़ा होई।

अर्थः- अगर सूतक को मान लें भाव अगर मान लें कि सूतक का भ्रम रखना चाहिए, तो यह भी याद रखें कि इस तरह के सूतक तो भरे पड़े हैं चूल्हे में जलाए जाने वाले सूखे गोबर और लकड़ी में भी कीड़े होते हैं वे भी पैदा होते मरते रहते हैं ।

जेते दाणे अंन के जीआ बाझ न कोइ । पहिला पाणी जीउ है जित हरिआ सभ कोई ।

अर्थः- अनाज के जितने भी दाने हैं, इनमें से कोई भी दाना जीवन के बगैर नहीं है । खुद पानी भी जीव ही है, क्योंकि इसी से हरेक जीव हरा - भरा जीवन वाला रहता है । सूतक कैसे रखा जा सकता है ? भाव, सूतक की रस्म पूरी तौर पर मानना बहुत कठिन है ।

सूतक किउ कर रखीऐ सूतक पवे रसोई । नानक सूतक एव न उतरै गिआन उतारे धोई । 1। मठ-1।

अर्थः- क्योंकि इस तरह तो हर समय ही रसोई में सूतक बना रहता है । हे नानक ! इस तरह भाव, भ्रम में पड़ने से सूतक मन से नहीं उतरता, इसे प्रभु का ज्ञान ही धो के उतार सकता है ।

मन का सूतक लोभ है जिहवा सूतक कूड़ । अखी सूतक वेखणा पर तृअ पर धन रूप ।

अर्थः- मन का सूतक लोभ है भाव, जिस मनुष्यों के मन में लोभ रूपी सूतक चिपका है जीभ का सूतक झूठ बोलना है भाव, जिस मनुष्यों की जीभ को झूठ - रूप सूतक है जिस मनुष्यों की आँखों को पराया धन और पराई स्त्रीयों का रूप देखने का सूतक चिपका हुआ है

कनी सूतक कंनि पै लाइतबारी खाहि । नानक हंसा आदमी बधे जम पुर जाहि ।2। मठ-1।

अर्थः- जिस मनुष्यों के कान भी सूतक हैं कि कानों से बेफिक्र हो के चुगली सुनते हैं हे नानक ! ऐसे मनुष्य देखने में भले ही हंसों जैसे सुंदर हों तो भी वह बंधे हुए नर्क में जाते हैं ।

सभो सूतक भरम है दूजै लगै जाई । जंमण मरणा हुकम है भाणै आवै जाइ ।

अर्थः- सूतक निरा भ्रम ही है, ये सूतक रूपी भ्रम माया में फसे मनुष्यों को आ लगता है । वैसे तो जीवों का पैदा होना मरना प्रभु का हुक्म है, प्रभु की रजा में ही जीव पैदा होता और मरता है ।

खाणा पीणा पवित्र है दितोन रिजक संबाहि । नानक जिन्ही गुरमुख बुझिआ तिन्हा सूतक नाहि ।3। पउड़ी ।

अर्थः- पदार्थों का खाना - पीना भी पवित्र है भाव, बुरा नहीं है, क्योंकि प्रभु ने स्वयं इकट्ठा करके जीवों को रिजक दिया है । हे नानक ! जिस गुरमुखों ने ये बात समझ ली है, उन्हें सूतक नहीं लगता ।

सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिस विचि वडीआ वडिआईआ । सहि मेले ता नदरी आइआ । जा तिस भाणा ता मनि वसाईआ ।

अर्थः- सतिगुरु के गुण गाने चाहिए और कहना चाहिए कि गुरु बहुत बड़ा है, क्योंकि गुरु में बड़े गुण हैं । जिस मनुष्यों को प्रभु - पति ने गुरु से मिलाया है, उन्हें वे गुण आँखों से दिखते हैं

करि हुकम मसतकि हथ धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ । सहि तुठै नउनिधि पाईआ । (5-472)

अर्थः-अगर प्रभु चाहे तो उनके मन में भी गुण बस जाते हैं । प्रभु अपने हुक्म के मुताबिक उन मनुष्यों के माथे पे हाथ रख के उनके मन में से बुराईआं मार के निकाल देता है । अगर पति - प्रभु प्रसन्न हो जाए तो जानो सारे पदार्थ मिल जाते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"